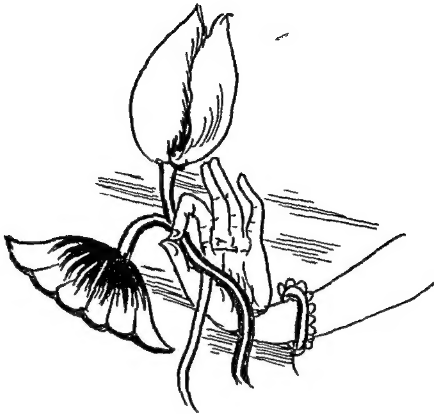
स्नेहलता वार्ष्णेय

अनबींधे गीत



प्रकाशक
किरन पब्लिकेशन्स
पुरानी मडी अजमेर

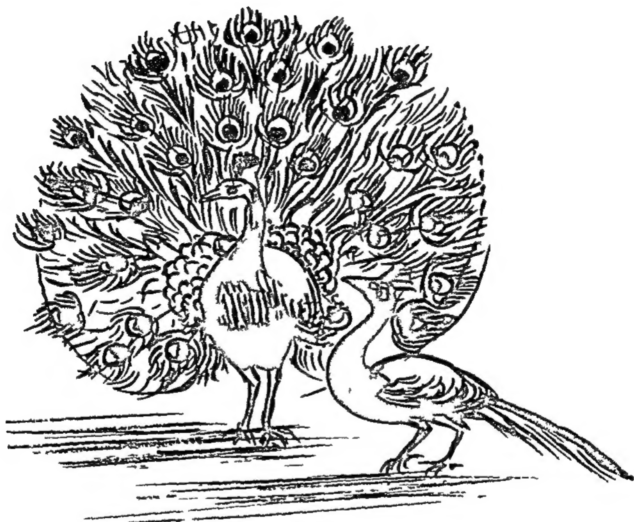
प्रथम सस्करण सन् १९८९
मूल्य २५ रुपये
आवरण हरिपाल त्यागी
रेखाकन स्वय लेखिका
एव
भवर चौहान



आभार

इन गीतों को आशीर्वाद कवि हृदयो के मिले
प्रेरणा मिली स्नेहिल सहचरी 'शान्ता की
साज और आवाज स्वर साधिकाओ ने दिए
मैं गद्गद हूँ, आभार प्रदर्शन करती हूँ।

स्नेह ''वल्लरी''

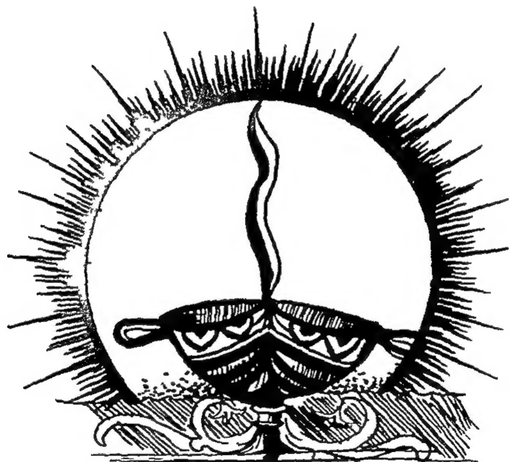




आशीर्वचन

आयुष्मती स्नेहलता वार्ष्णेय एक अनुभवी प्राध्यापिका होने के अतिरिक्त साहित्य और कला के प्रति शुरु से ही अर्पित रही है। लम्बी अवधि तक बीमार रहने के कारण इन्हें प्रकृति की तरफ से अतिरिक्त लाभ मिला है कि आप अन्तर्मुखी हो गई हैं।

आपके गीतों का पारायण मैं नहीं कर पाया। यह सुयोग भी कभी न कभी मिलेगा ही। फिलहाल इस गीतकार के लिए मेरे भीतर से आशीष ही फूट रहा है। माँ शारदा स्नेहलता जी का कल्याण करेंगी और इन्हें और अधिक बेहतर गीत और कविता रचने के लिए आगे बढ़ाएगी।



सु स्नेहलता वार्ष्णय का कविता सग्रह

* अनचीन्हे गीत *

मैं पढ गया हू।

सुश्री वार्ष्णय अन्तर्मुखी रचनाकार है। वस्तु जगत से असपृक्त होने पर ही भाव जगत की राह म रहकर उनके भीतर एक विराट चैतन्य के प्रति अपने आपको समर्पित करने की वेगवान प्रेरणा होती है।

उन्होंने लिखा है —

मैं विहस रही उर अन्तस में
मधुरिम अनुरागी गीत लिए
मेरे मना   मेरे देवता।

इसमे वे अपने देवाधिदव के समक्ष आत्म समर्पण के लिए व्याकुल हैं। वस्तुत उनकी भावधारा पूर्ण समर्पण की है लेकिन लोक में यह सम्भावना बहुत क्षीण रहती ह क्योंकि उनके देवता सूक्ष्म हैं और इसीलिए उनका जीवन एक ऐसी मछली की तरह से है जो जल को छू नहीं पाय

मैं बावरी सी निरी अकिंचन
ल आर्द्रता को रही भटकती
न देव-द्वारा न विधि की देहल
कहाँ मैं जाऊँ किसे रिझाऊँ

उन्होंने कल्पना जेसे अरूप भाव पर बहुत अच्छी पक्तियाँ लिखी है —

श्वेत धूप सी निर्मल हो तुम
गगा जल सी हो पावन
करें वन्दना नतमस्तक हो
पुष्प चढ़ें रोली चन्दन

उन्होंने कवयित्री महादेवी श्रद्धाजलि बहुत अच्छी लिखी हे। उनकी ऋतुओ पर लिखी गई कवितायें भी अच्छी कवितायें है। 'नए वर्ष का अभिनन्दन भी एक अच्छा गीत है। इसी प्रकार व्रज की पनिहारिन एक अच्छा गीत हे।

मेरा विश्वास हे कि हिन्दी ससार सु स्नेहलता वार्ष्णेय के इन गीतो का स्वागत करेगा।

सु वार्ष्णय को काव्य-रचना पर मेरी ओर से बधाई।

2 4 88

तारा प्रकाश जोशी

* आत्म कथन *

गिना चुनी मा य कविताएँ अन्तम फलक पर वनत त्रिगडत चित्रा का सवदनाश्रा क प्रकम्पन लिए भावा का, श्वामा प्रश्वामा की तूलिका म वन चित्रों का चित्रण मात्र ह। आराध्य दव क सम्मुख प्रान पता का एकान्त घडिया म वठा यह आराधिका अपन शब्द प्रसूना का आराधना म चढाती हुई माला पिरा वठी।

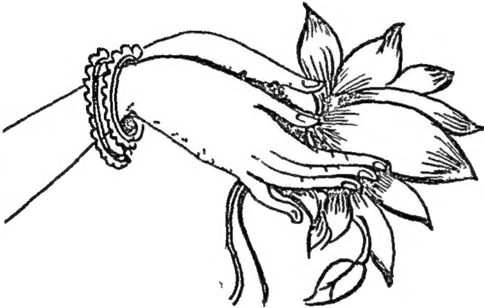
वात राग म पीडित हान क कारण जब जब सामारिक झझावात मिल आशा निराशा क झूल पर झूलती रहा आर अवसर-अनुकूल शब्दो का मालाश्रा म पिराती रही गाता क स्वर माधुय स इन्ह सजाती रहा। इन गीता द्वारा ही अनुलप मिलना रहा और कहन का वचा ही क्या??

किमस करू शिकवा शिकायत
य ता अपनी बदकिस्मती की तसवीर ह
दर्द इनम समाया खयाला क मजर रह इतने
कि सागर की लहरा न सिर पटक कर
खाया पाया और फिर खा दिया

कही कुदरत क साये म बैठ गई
जन्म दन वाली जमी की परस्तिश की
अपने खयालो मे खोई गा उठी
और वक्त वक्त पर कुछ लिख बैठी

अर्पित है ये समर्पण शब्द प्रसूनो मे स्नेह वल्लरी





प्रथम पुष्पाञ्जलि

पृष्ठांकित



सरस्वती पूजन . . वन्दना मे



माँ सरस्वती भगवती।
—विद्यादायिनी माँ।।
"दे ज्ञान जोत" उर-तमस छाँट दे माँ।।
सद्भावभरो जग-जननी माँ
गौरव गरिमा अर्पित कर दो
हे विश्व-पालिनी
हे पुस्तकधारिणी
हे हँस-वाहिनी माँ

वीणाझकृत सब सजे साज
अक्षत रोली चदन-कुकुम
गगा जल पावन पुष्प-माल
तव आराधन में शत शीश झुकें
हे धवल अचला माँ।
काटो बँधन तन तापहरो
स्वीकार करो
मेरे वन्दन
हे कमल विराजित माँ।
गीता ज्ञान दायिनी माँ।।

हे हँस वाहिनी माँ ।।

वसुन्धरा

इस जन्म भूमि पर बलि बलि जावें
प्रकृति सौम्यता जहाँ पली
गंगा-यमुना जल प्रपात हिम
प्लावन नदियों का सदा रहा
तरू आच्छादित पर्वत मालाए
अवनी तल ने श्रृंगार किया

हीरे मोती माणक-मणियाँ
वसुन्धरा धन धान्यभरी
पशु-पक्षी, खगकुल कलरव
आकर्षित करते वनके विहार
धर्म प्रेम की बागडोर ले
पावनता की जो दाती है।

सद्भाव सौहार्द्रता स्नेहसिक्तता
अन्तस में जिसके पले हुए
'तेरा मेरा' यहाँ कुछ भी नहीं
एक अनेक में, अनेक एक में आपूरित
दया दान देकर अपना सब कुछ
सब में है, गुँथा हुआ



12

वन्दना मातृभूमि की

जन्म भूमि मातृ भूमि।।
इस धरा पर वसुन्धरा पर
शत नमन शतशत नमन
ममतापूरित है यह अचल
एकता में हम पले सब
धूप ज्योति वन्दना की
पुष्पो की माला है अर्पित

शत नमन

शत शत नमन । टेक।

सप्त स्वर हैं आज मुखरित
इन स्वरो में हम समर्पित
मातृभूमि वसुभरी यह
धनभरी धनधान्य पूरित

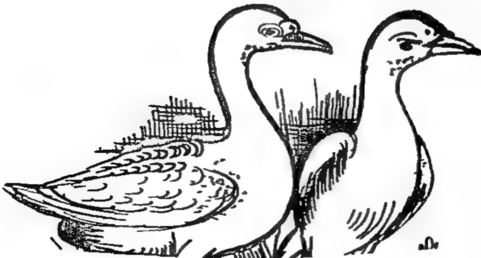
शत नमन।

शत शत नमन।।

भावना मेरी समर्पित
कामना मेरी समर्पित
मन समर्पित तन समर्पित
और यह जीवन समर्पित

शत नमन।

शत शत नमन।



"जय राष्ट्र ध्वजा"

जय राष्ट्रध्वजा। जय मातृभूमि।
जय जन्मभूमि। जय वसुन्धरा।।
गंगा यमुना गोदावरि-जल
जिसको पावनता देते हैं
गिरि मेखला हिम-गिरि किरीट
जिसके आभूषण बनते हैं
सागर प्रवाह के प्रक्षालन
जिसके चरणो को धोते हैं
शत नमन तुम्हें शत शत नमन
जिसकी माला के पुष्प बने।।
जय मातृ भूमि जय राष्ट्रध्वजा
हम एक सूत्र में बँध जावें
बापू का सपना सत्य करें
ले राष्ट्रभावना बढें सभी
हम एक रहें, ये स्वर गूँजे।।

श्रम स्वेद कणो में बिखराकर
खेतों में सोना निपजावें
महिमा मण्डित इस वसुधा पर
ले धर्म ध्वजा हम बढे चलें
दानवता का कर दमन शीघ्र
हम शौर्य कवच ले बढे चलें
मानवता जन जन में भरकर
हम शख फूक जय नाद करें।

जय राष्ट्रध्वजा
जय वसुन्धरा।।

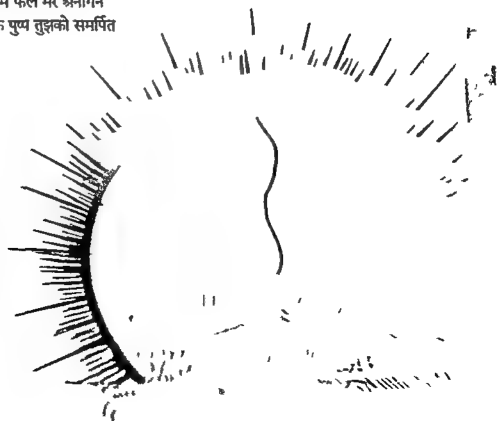


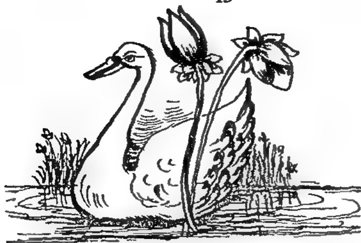
"मागलिक कार्य"

मगल गायन की धुन लेकर
नूपुर पायल झकारो पर
थिरकन ले स्वर सरिता लहरी
अन्तस श्वासो क तारो पर
ले कोमलता किसलयको पल से
निखराती गध प्रसूनो की

उषा नवोढा बढी चली
मानव से मानवता तक
उद्बोधना देने जागृति देने
आशा किरणो को बिखराकर
दुखती कोरो को अनुलेपन देने
यह उषा सुन्दरी बढी चली

रवि की स्वर्णिम किरणो को
बिखराकर तू चली गई
मैं हूँ समर्पित इन शब्दो से
द दे मुझको सब कुछ इतना
शुभ काम फलें मेरे अनगिन
आशा क पुष्प तुझको समर्पित





मानस उज्ज्वल कर दो मेरा ....

'मानस उज्ज्वल कर दो मेरा ,
हे विभुवर दु ख दर्द हरो मेरा
हे विभुवर।।"

जग पालक प्रतिपालक रक्षक
विभु अन्तर्यामी आराध्यदेव
विघ्न विनाशक त्राता-दाता
हे भाग्य विधाता सिद्धि भरो

तव गौरव में नित नत-मस्तक
स्वीकार करो अर्चन-वन्दन
मगल गायन के नव विराग
गगा जल पावन कण सिंचित

यह पुष्पमाल
ये स्नेह तरल दीपक
यह धूपदीप नैवेद्य प्रभो
स्वीकार करो
ये स्नेह प्रसून
रचना प्रसून

भक्ति-भाव

"भक्ति-भाव रस पगी लता '
विभुवर तव द्वारे बैठी हूँ
हूँ सराबोर अनुराग रंगी
देवल द्वारे मैं नतमस्तक।

प्रभुवर मेरे रक्षक जग के
अर्पित करती हूँ स्नेहिल स्वर।
भावों से गुम्फित यह माला
रागों से रंजित यह थैली
धूप दीप यह जल पावन
देवल द्वारे नयना अपलक।।

संकट काटो, संतपतिरो
मैं हूँ अबला सबला बल दो
और प्रेम सद्भाव पलें
मेरे अन्तस की कोरों में

काटो बंधन विभु [illegible]।
[illegible] नयना दर्शन [illegible] दो।
[illegible] अन्तर्यामी ! [illegible]
[illegible]।।

साकार करो विभुवर दर्शन

मैं विहँस रही उर अन्तसमें
मधुरिम अनुरागी गीतलिए
मेरे मना मेरे देवता।

गुजन भर कर इन रागो में
नूपुर पायल झकारो पर
देवल-देहली मैं नाच उठी
हियरा जियरा को अर्पित कर
मेरे मना मेरे देवता

नयना खोलो अपलक देखो
हरलो पीडा जन मानस की
व्यथा रही यही मन की
साकार करो विभुवर दर्शन
मेरे देवता

[स्वर लहरी गायन में] सा सा नीरे सा
छलछद्म हरो निर्मल मन दा
सब कुछ लेकर दे दो दर्शन
जन मानस को उज्ज्वल कर दो
दे दो दर्शन ।





द्वितीय पुष्पाञ्जलि

मीरा

कान्हा रगराती बावरिया
मुरली की धुन सुन मगनभई
मीरा गिरधर के रगराती
नाची रे मीरा रग राती गाती
सुध-बुध खोई
उन्मुक्त हुई
सारे बन्धन तोड चली

भक्ति भाव की ओढी चूनर
लहँगा चोली अनुरागरगा
पहन मीरा मगनभई
मुरली की धुन सुन नाच रही
कान्हा रग राती बावरिया
मीरा नाच रही ।

मूरत कान्हा की नैनन बसी
भावपगी सब भूल चली
नूपुर पायल कँगना खनके
मजीरा-धुन पे "कृष्णा! कृष्णा" गाती
गिरधर मोरे गिरधर साँवरिया
तनमन धन बिसरा के
जग के वैभव ठुकरा के
नाच रही मीरा बावरिया ।



साधना

मेरे मानस की वीणा!
झकृत तुझसे क्यो
दु ख भरे गीत
अनुतप्त राग
होनी अनहोनी विहाग

हृदतत्री के अकुलाये तार छिडे क्यों?
श्वासों के आरोह पर
प्रश्वासो के अवरोह पर
अनुलेप लगाने क्या?
सान्त्वना का??

मन एकान्त प्रिय बन
चल साधना कर
जो न मिला उसेपा
दृढताला
पहुँच वहाँ
जहाँ अनेकता एकता में
दु ख सुख में समाते हैं
श्याम, श्वेत सात्विक बनते हैं
शरीरी भौतिकी प्रतिवाद
आत्मा को निखार कर
परमानन्द अखिलेश्वर को पाकर
"नश्वरता का"
रहस्य समझते हैं।



समर्पण

ये अखिया बिलख रही मेरी
बीती घडियो की याद लिए
क्यो आर्द्र हुआ जाता अन्तस
सुनते गुनते अन चाहे क्षण
मैं मौन रही उन्मादिनी सी
अनगढी कथा जब गढी गई
यह हृदय टूटता टूट गया——
भीषणझझा——के गर्जन से
अब तो भगवान! अभिलाषा यही
अपनी शरण में ले लो मुझे
दु खियारिन इस अबला की
भक्ति स्त्रोत की पावनता दो
अपनी शरण मे ले लो भगवन्!
तेरी साधना में हूँ अवगाहित
विभु मेरे तुम, साध्य बनो।
मेर देवता।।



"तसवीर"

एक दिन
फिर निश दिन
सासारिक झझावातो से
भटकने के उपरान्त
देवालय के पार्श्व में
धूपदीप नेवेद्य लेकर
अर्चना हेतु प्रतिमा के सम्मुख
मैं नत-मस्तक हुई
प्रतिमा को पुन निहारा
आराध्य और आराधिका के
दृग चार हुए
रक्ताभ हुई
कुछ शर्माई
सकुचाई
फिर सौंपदिया
अपना तनमन

चेतनता लौटी
देखा फिर देखा
उस प्रतिमा को
जगत नियन्ता की
जगत प्रतिपालक की

आराधना के पावन फलक पर मेरे अन्तस में
एक तसवीर बनी न मिट पाई ।।



महादेवी

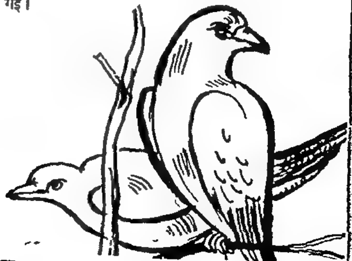
तरल सुवासित चन्दन पूरित
श्वासों को मृसृणता देती
कुदरत के विस्तृत प्राङ्गण में
प्रमित कर गई देवी महादेवी

युग आधारित बनी पावनी
गगा लहरी मृदुभावों की
स्पर्शित करती रही जाह्नवी
मानवता से मानव को भरती

तीर्थ स्थली अध्यात्म ध्यान की
ज्ञान जोत की गौरव गरिमा
तेज प्रकाश पुज अनुपूरित
महादेवी "देवी" बन चली गईं।

देवलोक से रही चाहतीं
मिटे कलुषता जन मानस की
द्वेष-भाव और धर्म अन्धता
आतक वाद की बढती विभीषिका

दर्द भरी थीं दर्द लेखिका
जन जन के उच्छ्वास लिए
जीवों पर दया निछावर करतीं
सब कुछ लिखकर चली गईं।





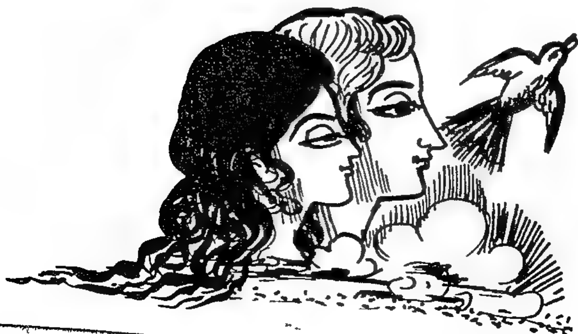
तृतीय पुष्पाञ्जलि

बेपनाह दर्द

किन टुकडो में टूटा मानव
अपने मानस को टटोलता है
घुटता हुआ बेमाने होता है
चाहत को अपनी समेट लेता है

प्यासा है अधूरा है बँटा हुआ
भटकता है लडखडाता है
उठकर दूरियाँ छूए किस छोर की
जब स्व लुटता है अपना बिकता है।

इस दुनियाँ में फरेब बहुत
नाते रिस्तो का प्यार कम
अपना कहलाने वालो की देहलीज पर
ताडना अवमानना बनी ही रही।



"विकलता"

स्मृति पटल की रेख धूमिल
क्यों कसकती आज प्रतिपल
नेत्र सीपी सम्पुटों से
क्यों बिखरते आज मोती?

रात्रि के इस मौन में भी
वेदना क्यों है सताती
मखमली नरमी बिछावन
क्यों न मुझको नींद आती?

दीप ज्योति भावना की
क्यों प्रकम्पन आज लेती?
माला-मनका के ध्यानमध्य
उठते प्रभंजन मन के द्वारे।

दीन दाता! हे विधाता
क्यो न तेरा दान मिलता
स्वारथ छलना के परे भी
क्यो न उरका तमस छँटता?



अन्त टीस

दर्द अपार मिला मुझको
दरिया उमडा
आँसू आहो का

बेचैन रही जीवित भी रहीं
इन सूखे से
निश्वासो पर

फिर भी मैंने विश्वास किया
इन बुझी हुई सी
राहों पर

उम्मीदें सारी सिमट गई
सामाजिक पहलू
के बल पर

अंधियारे में मैं पड़ी हूँ दीप की बाती बनी
जो न जल पाई कभी   क्या कभी जल पायगी ??
सघटित अंधेरा है दिल में
राहें धूमिलता लिए हुए
फिर क्या मंजिल मिल पायगी ?



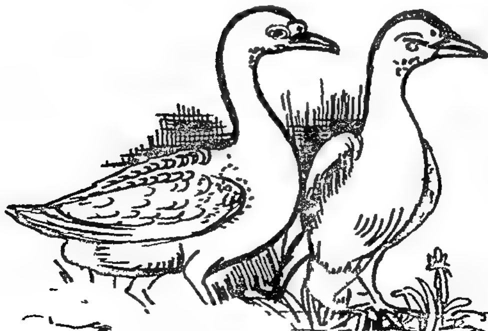
विक्षिप्तता

लिखूँ क्या संगेदिल तुझे बता
निर्झरिणी मेरी सूख गई
रातो की निंदिया ऊबी तो
पलके ढाँपे चुप चुप रोई।

गाऊँ कैसे मैं गीत मीत!
स्वर सरिता मेरी बीत गई
छेड़ूँ कौन राग किस सप्तक तक
आवाज चीन्ह जब सकूँ नहीं

निरी अकिंचन सी बावरी मैं
रीती बीती सी गागर हूँ
दीप लो की बुझी वर्तिका
फिर मिले राह कैसे कोई

मर्यादित सीमित नारी हूँ
अलिरी! कैसे व्यथा कहूँ?
फिर गढ़ूँ कथा कैसे कोई
जब भाषा अपनी रही नहीं।



"परिछाया"

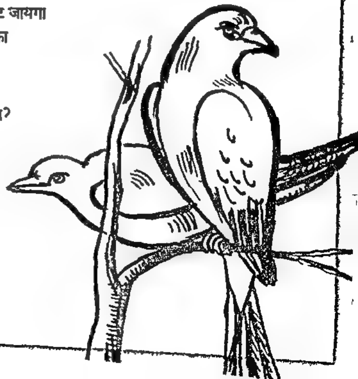
क्या देखूँ दर्पण तुझको ?
तुझमें पडती परिछाया
अनहोनी न कह जाये

देखा दर्पण तुझको यदि
उभरेंगी सभी दरारें
आँखों के काले साये
चितवन का दर्द घनेरा

नैराश्य भरे अँधियारे
आशाओं की सिमटन
सीने की उठती धडकन
आहों का सर्दीलापन
तसवीर बनेगी धुधली

कम्पन पीडा जब लेगी
दर्पण की परछाई में
चटखन दर्दीली होगी
कट कट कर कट जायगा
बिम्ब मेरे चेहरे का

ककाल बनेगा
तन फिर,
इस जीवन का क्या होगा?



"व्यथा"

आज मेरा मन विकल है
किस व्यथा को कह सकूँ
भावना की लम्बी डगर पर
किस रेख तक मैं चल सकूँ

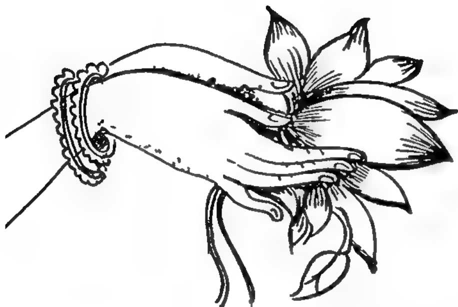
हे सखी। हे सहचरी
हे भाव भीनी माधवी
हे बसन्ती आसवी
हे रंग डूबी खजरी

क्या आँसुओं की यह शपथ
और बेबसी की यह कसक
मनुहार पे मनुहार भी
विचलित न कर पाई तुझे

तो तुझे खुशियाँ मिलें
और सब कुछ वह मिले
जो मुझे न मिल सका
मिल भी कभी कब पायगा।







चतुर्थ् पुष्पाञ्जलि

समय की करवट

समय तूने क्या क्या न किया
चिर परिचितो
खून के रिश्तो को
अजनबी बना डाला
जाने पहचाने रास्तो को
मीलो का विस्तार दे डाला



समय तूने क्या क्या न किया?
दीनो को दु खियारो को
साहस दिया सहारा दिया
मुरझायो को पनपा दिया
अचेतन को चेतनता दी
उर के फफोलो पर
मसृण अनुलेप कर दिया।

समय तूने क्या क्या न किया?
कहीं प्यास दी पर जाम नही
कही किस्मती चक्र चला दिए
कहीं सोना रुपा बरसाया
कहीं दैन्य घना को छितराया
समय तूने क्या क्या न किया?

किसी देहल पर शहनाई बजी
किसी देहल पर मौतकी छाया पडी
कहीं प्यार पगा सौभाग्य जगा
कहीं सयोग छिना, वैराग्य मिला
समय तूने क्या क्या न किया?

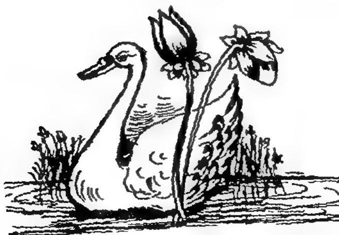
परिवर्तन

आशा उभरी विश्वास जगा
नीलाम्बर अनुराग भरा
सध्या ने गल बहियाँ डाली
नव राग कलित निशपति के उर

ब्रीडा उभरी रोमाचन से
चिबुको अधरो के मिलने स
कपन हुआ चन्द्रिका छिटकी
नीलाभ क्षितिज के छोरो से

नक्षत्र थाल ले कहाँ चली
ओ सुरबाला सौविभावरी
क्या मधुर मिलन की बेला में
तूने मदिरा भर जाम पिए

कुछ घडियो की शान्ति परे
उषा ने प्रभाती स्वर गाये
मनुहारो की तालें दे देकर
नयना सीपी मोती पागे।



कल्पना

श्वेत दूध सी निर्मल हो तुम
गगा जल सी हो पावन
करें वन्दना नतमस्तक हो
पुष्प चढे रोली चन्दन

सावन की तुम निर्झरिणी हो
हो बसन्त की नव कलिका
चन्दन वन की सुगन्ध लताहो
मधुवन की कोकिल बयनी

मन-मानस की नई कल्पना
भावो की मीठी लहरी
राग विभावरी सुर-सरिता की
हृद-तत्री की मीठी झनझन

आराधना की बनी सहचरी
पूजा की हो मादकता
मगल बेला की ध्वनि हो
तो ध्वनित करो अन्तस मेरा।



"एक ख्वाब"

ख्वाबों ने जब करवट ली, दग रह गई अखियाँ जुड गई
वह रूप अप्सरा तनसुख पहने   फरिश्ता जन्नत से उतर आई

आसमाँ मे चाँद मुस्कराया
सितारे फलक पेबिखर गए
रुपहली चाँदनी सरपर ओढे
जमी पे यह कोन उतर आया?

ख्वाबो की रानी मलिका
शायर कीरहा सुनहरी कल्पना
बुझी जिन्दगी को तरन्नुम देने
दिल कुश साज तुमने छेडा

रजनी गन्धा की खुशबू हो
महकी हुई हो चमन बयार
मैं अपना आपा खो बैठी
गुलशन म तुमको जन पा न सकी

अप्सरा हो जन्नत की रहने वाली
ख्वाब बनी जमी पर उतर आई
प्रश्न उठते रहे, राहत देत रहे
इसी बीच में सब कुछ दे डाला



प्रतीक्षा



शान्त प्रशान्त साध्य वेला में
सरिता तट पर बैठी एकान्त
भाव प्रगल्भा रूप यौवना
नेत्र निमीलत मन-उन्मन

लौट गये पक्षी नीडो को
दिशा छोर लालिमा मिटी
मन मानस में रही प्रतीक्षा
क्यो प्रियतम लौटे न अभी?

स्मृतिभार को ले उठ बैठी
सरिता लहरो को दे कम्पन
रिक्त कलश भर सम्मुख देखा
शून्य ठगी सी खडी रही

आकाश मध्य चन्दा मुस्काया
चन्द्रमुखी को देखा पृथ्वी तल पर
भ्रम गया टूट जब हग चार हुए
सकुचाई अवगुण्ठन खींच लिया

रोमाचन में सुध बुध खोई
छनकाती कगन गृह लौट पडी
चहुँ ओर प्रकृति सुषमा फैली
सकेत पिया के मिलन का
पग ध्वनि सुनतो, मुडकर चल दी

नूपुर पायल की थापो पर
चलती चलती वह चली गई

सपना क्या सच होता है

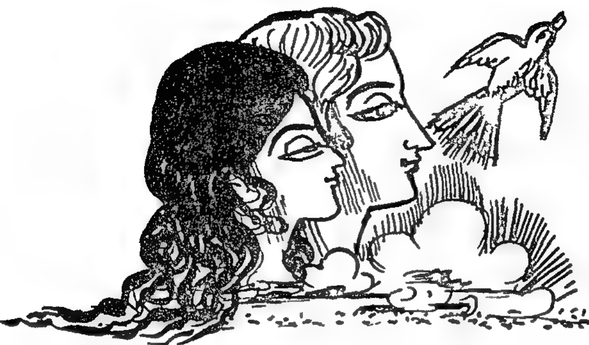
स्वप्न कभी सच न हुआ
क्या होगा कभी?
इन आपाधापी
बदलते
पिथुनताई
पापचारिता
बदनीयती इरादो में

कब इसानी तीर चले
इन मोडो
चौराहो
चौबारों पर

जहाँ सदा मानवता कराहती है
दानवता पनपती है
धिक्कारे मिलती है
देवता अब रहा कहाँ?
जब दानव बन गया इन्सान
ठोकरें खा
लोहू बहा
डिगे मत उस पगडडी से
जहाँ सारे मोड एक होकर मिले हैं।

मेरा यह स्वप्न। स्वप्न! स्वप्नो में समायायित होकर
काश। कभी साकार सजीव हो जावे
वहाँ
जहाँ
जिन्दादिली के नगमे गाये जाते हैं
पखावजें बजती हैं

अनेकता में एकता को लेकर
धडकने धडकती हैं।



अनुबन्ध

यह मिलन तुम्हारा मिठास बना रहा
कटुता कट जायगी जीवन की
सौजन्य से सब कुछ मिलता रहा
हर पल क्षण की रौनक बढ जायगी
तेरे चाहने की चाहत और बढती रही
जीवन तरी को तो पतवार मिल जायगी
सुख दु ख के सगम मिलते रहे
तो निकषा पे दोनों ही कस जायेंगे।

अन्तस मन के अनुबन्ध होते रहे
स्नेह की दृढता यदि बढती जायगी
तोमीत मेरे! उस पथ पर आगे बढें
जहाँ एक अनेक में समा जाते

"भाव-विभोरिता"

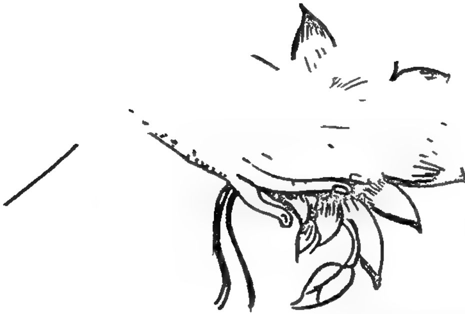
मैं बावरी सी निरी अकिंचन
ले आर्द्रता का रही भटकती
न देव द्वारा न विधि की देहल
कहाँ मैं जाऊँ? किसे रिझाऊँ?

बनी रही मैं वह बूँद नभ की
सीपी मुक्ता बन न पाई
बनी रही मैं वह मीन जल की
प्रवाह सरिता के छू न पाई।

रही अविकसित कली वृन्त की
न पुष्पित हो जो मुस्काई
जली शलभ हूँ उसदीप लौ की
स्नेहतरलित जल न पाई।

मिटे कसकती यह उर की पीड़ा
ये ताप तनके औ मरी तडफन
तो पहुँचूं द्वारे हे राम तेरे
तुझे सौंपूं तरा औ स्व को मिटा दूँ।





पचम पुष्पाञ्जलि

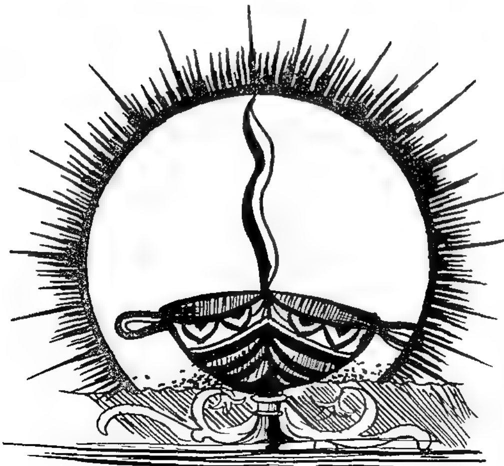
दीपो का पर्व

दीपमालिके! दीपो की अवली
स्नेह तरल ज्योतित हो।
छँट जाये तमस मानस का
कण कण विहँसित।

आलोक पर्व! आलोकित कर
दे सदाचारिता अनाचार सभट
जन जन को श्वेतता दे दे
सात्विकता दे, हे ज्योतिर्पुंज!

सुप्त मानव का कोर कार
प्रकाशित कर जागृति द दे
दीप से दीप की अवली जल
इतस्तत सर्वत अधकार मिट जाय।

"राम राज्य की साकारिता दर्शित हो जाये।
सुख सम्पन्नता विस्तार ले दु ख दर्द सिमट जाये"



उछाह उंमग भरी होली

फगुनाई बयारो के झोको में मदमाती
होली की ऋतु आई मनभावनी सुहानी
हर्षाती पुलकाती सरसाती तन मन को
अनुराग राग में अनुरंजित होली आई

ठुमरी गायन ढपली ढोल बजे
पखावज बाजें चचरीक रागो में
गीत गूँजे घर घर में

छटा छाई यत्र तत्र
इन्द्रधनुषी रग सजे
टेसू के रगो में
होली की ऋतु आई
मनभावनी सुहानी
ऋतु आई होली की



कोयलिया कुहुक रही आममौर गन्ध पे
वन मयूर नाच रहे शोभाको सरसाते
हियरा हुलस रहा जन जन का, युव जन का
ठुमक ठुमक नाच रहीं युवती वधुएँ बालाएँ

ऋतु आई फगुनाई
धूम मची होली की
नूपुरो की खनक खनक
पायल की रुनन झनन
अबीर उडे गुलाल उडे
छटा-विविध रगो में

होली पर्व पर

फगुनाई बयार बही
पुरवइया के झोको पे
होली का पर्व सजा
ढोल मजीरा तालो पे

कगना खनके खनक खनक
पायलिया नूपुर झनन झनन
नाच रही अङ्गनाएँ, युवती बालाएँ
सतरगी हरी पीली चूनर ओढे

"साम म प ग म, नि ध, नि सा रे, नि सा"

कोयलिया कुहुक कुहुक कूक रही
हियरा हुलसे नवोढा दुल्हनोंका
रगपती, गातीं ढोलक थापों पर
अबीर गुलाल रग पिचकारी भर
खेले होली, नाचें गायें झूम के
चग पखावज मजीरा की तालों पे
झूमझनन झनन झनन



ऋतु आवर्तन

शिशिर की ठिठुराती ठण्डक बीती
हेमन्त ऋतु ने अपना सोन्दर्य बिखेर दिया
बीच में कहीं पतझड चरमरायातो
बसन्त ने कलिकाओं को महकाकर
पीतिमा सरसो में बिखरादी, बरसा दी

यह कैसा ऋतु परिवर्तन
कैसी लीला विधि विधान की
यह कैसे मधुपर्वाकर्षण
कितने भीने ये स्पर्शन?

मधु आया शर चाप लिए
रगीनी दिशि दिशि मे फैली
लता-गुल्म पुष्पित हो गये
बुलबुल मैना ने छेडी तान

मलयानिल के रोमाचन से
जूही चमेली ने चटखन ली
बगिया महकी द्रुम खग-कलरव।
तब कुजन में छाया बसन्त



पावस बरसाने की . . .

उमड घुमड ऋतु आई पावस की
बदरा छाये घनघोर घटा
नाचें मोर पपीहा बोलें
झिल्ली झींगुर ध्वनि गूँज रही

चहुँ दिशि राग मल्हार लिए
गोपी ग्वालिन बरसाने की
कान्हा की बसी साल रही
यादो के घन अम्बर गर्जन।

सावन भादों की झडी लगी
गोपिन की बरस रहीं अखियाँ
कदम्ब तले जब रसे रास
मधुरिम यादो के विरहभाव

कान्हा की बसी बाज रही
मधुबन में मावस-ऋतु आई
हियरा हुलसे तन मन पुलकित
मधुरिम रिमझिम वन विहार
नौका विहार
रास रचे कुजन में कुजन में

उमड घुमड ऋतु आई
पावस की



राग मल्हार मे सावन मनभावन

वर्षा की ऋतु आई
सुहानी मनभावनी
माटी की गध लिए
बयार बही मदमाती
हर्षाती पुलकाती

तन मन का तापमिटे
सावन की रिमझिममें
फुहारो के स्पर्श लिए
नाचरही बालाएँ युवती

बधुएँ ग्राम वधूटी

कर श्रृगार सज धज के
धानी ओढी चूनरिया
लहरिया मेंहदी रगीरची
चली नवरग मेले मे
तीजो के झूलो पर
उल्लास भरी झूल रहीं
श्रृगार किए रस डूबी
इठलाती आई
वर्षा की ऋतु आई
नाचें झूम के झनन झनन
पायल नूपुर खनक रहे
नाचें झूमके।



आया बसन्त मधुमय बसन्त

आया बसन्त मधुमय बसन्त
मलयानिल पवन झकोरो पर
मधुरागों का गुंजन लेकर
पीली सरसो के खेतो में

रस बिखराता रंग बरसाता
आया बसन्त पुलकित करने
जनमानस को

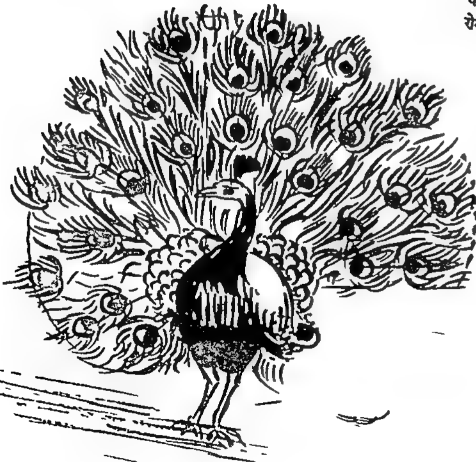
विहँसित हम सब झूम उठीं
गाती गायन मुस्कान लिए
स्वर सजे साज
मधुमास मधुर

तरुलता वल्लरी डाली पुष्पित
कोंपल किसलय सब डार-पात
कोकिल कूकी भ्रमरो के नाद
रोमांचित पलाश प्रसूनो से

तन मन पुलकित स्पर्शों से
बयार बहे, नाचें गायें
युव बालाएँ।।

ढपली ढोल मजीरा बाजे
वादन-नर्तन स्वर मुखर गये

आया बसन्त मधुमय
यह यौवन मन।





षष्ठम पुष्पाञ्जलि

अलविदा "87"

नम तुभ्यम!
नमस्कार!!
शत नमस्कार!!

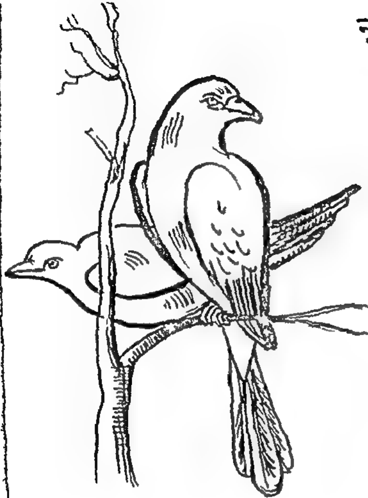
बीती घडियो की स्मृति तरग में
भूले बिसरे से बने चित्र
नये वर्ष की नव बेला में
आशाओ की नई उमग में

मोहक छवि लेती प्रकृति रम्य
पीली सरसो,--फैले वितान
पक्षी—कलर व मधुकर-गुजन
बगियन बगियन गन्धित बयार

आ पहुँचा यह सवत्सर नूतन वर्ष
शतश नमन करते हैं तुम्हें
हेमन्त शिशिर के सगम पर
अगवानी में विहँसित बसन्त

नव वर्ष तुम्हारे स्वागत में
कुदरत ने मनभर दान दिए
चाहत की स्वर्णिम किरणो ने
बुन डाले अनगिन ताने बाने





नूतन संवत्सर अभिनन्दन

नूतन सवत्सर अभिनन्दन
दिशा उदीची तव अभिनन्दन
ओढे स्वर्णिम किरणों को
उषा सुन्दरी किधर चली।

आशा उमग उत्साह लिए
मधुरिम रागो की तानो पर
नव सदेशो का ताना बुनती
तरल भाव ले किधर चली?

प्रकृति नई पुलकित पग पग
आकाश क्षितिज की घेरो से
गाती हुई राग विहाग नये
अनुरजित करने जन मानस को
हे उपालता! हे स्नेहासिक्त
हे मायावी! हे अमृता! भाव पगी
आशाओ की किरणें बिखराती
विश्वास पगी तू किधर चली?
'उद्बोधन देने जागृति देने'

"स्वागत" गीत

स्वागत है शत शत अभिनन्दन
वीणा के झकृत तारों में
भावा से गुम्फित रागो में
आगत सबका, शत, अभिनन्दन।

अर्पित पुष्पित अक्षत रोली
बिंदिया कुकुम अनुराग भरी
हम सब हर्षित गद्गद् पुलकित
स्वर सरिता मे अवगाहन कर

हे माननीय। हे माननीय।।
विहँसित पुलकित सब कर्ता जन।

मगल गानो की धुन लेकर
सौरभ सुरभित इस बेला में
गायन गुजित मधु रागो में
हैं तरल भाव मेरे अनगिन
हूँ स्नेहारिक्त
तव स्वागत में ।
अभिनन्दन में
अभिनन्दन में



यमन राग मे गेय

सजनिया मेरी मुझसे मत पूछो [टेक]

पद्म पराग में मादकता क्यों?
आतुर भृग से पूछो
जल बिन तडफत क्यो मरती है
दीन मीन से पूछो

केसर गध लिए क्यों भटकत
वन के मृग से पूछो
दीप-जोत पे क्यो मरता है
प्रश्न पतग से पूछो

कटक चुभन लिए क्यों डाली
पुष्प सुगध से पूछो
चन्दन तरु पर क्यो लिपटा है
व्याल-जाल से पूछो

मातृ-भूमिपर क्यों मर मिटता
वीर हृदय से पूछो
दर्द कसक वेदना अपरिमित
अनुरागी दिल से ही पूछो

नक्षत्र स्वाति में गिरती बूँदे
क्यो सीपी मुक्ता बन जातीं
क्यो हसा मोती चुगता है
या भूखों रह मर जाता है

इनके अन्तस की छिपी भावना
होनी अनहोनी से पूछो





जीवन के इस नभ तल मे

अनबूझ पहेली यह जीवन
होनी अनहोनी का सगम
जीवन्त उदाहरण सुख दु ख का
श्वासो प्रश्वासो का जमघट

छाया परिछाया निश दिन की
अपमान अवज्ञा उत्पीडन
घन तिमिर घोर नैराश्यभरा
हर पल छिन घडी घडी

कथनी करनी में द्वन्द्व रहा
कर्त्तव्यो का नित आयातन
यश-अपयश के प्रत्यावर्तन
घन आच्छादन घटना चक्रो के।

देवार्चन करती यह स्नेह तरल
आशा उभरे विश्वास जगे
छँट जाय अमावस अँधियारा
दूज-चाँद की क्रम लिए बढे
उल्लास मिले, वैभवछितरे
पूनम का चन्दा मुस्काये
जीवन के इस नभ तल में।

"आत्मादर्शना"

अनुप्रेरिता हो साधना से
आराधना से रही प्रशान्त
कौन सहचरी रहीं तुम कब?
क्या परिवर्तन इतना निस्सीम?

गैरिक वस्त्रों के आकर्षण
वय-देहली पे चरण पखारें
महिमा प्राप्ति ईश दर्शन की
आयातित है तपे रूप में।

सासारिक सुख त्याग दिए
श्वासो-प्रश्वासो की पूत अग्नि में
योगी बन गई प्रेक्षाध्यान-मध्य
(जन मानस के तुमने हरे ताप)
योगासन से रोग निदान किए।

महिमा सब है—आत्म त्याग की
जब त्यागा सब तब पाया सब
गया दान कब गया रिक्त
है सत्य कथन औ विधि विधान



ब्रज की पनिहारिन

नदिया तट पहुची पनिहारिन
रूप लुने वाके इतनो
कजरारी नयनन के सम्पुट
झपक लेत शरमायवे के

सखी सहेली छेड़े वाकू
यौवन मद में मस्ताती
किते गये अलि प्रीतम तोरे?
म्हारे तो तोपे दीठ करें।

सात गजा तेरो घाघरो
कचुक चूनरि तोरी रगभरी
कनकती तोरी, खनक खनक खनके
पायलिया बाजे तोरी (मधुर मधुर) मीठी तान लिए।

इतरायके सैनन सूँ बरज रही
पनिहारिन ब्रज की सोनी गोरी
म्हारे तो पिऊ गये हैं विदेसवा
काहे तोरे अलि[1] मोहे देखवे जुरै।

